Vol. 9
Issue 2
15 July 2018
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

प्राचीन काल में जल स्रोतों को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए मानवीय प्रयास

बीज शब्द :

प्राचीन काल में जल स्रोत, जल संचयन, प्राचीन जल प्रबंधन व्यवस्था, जलाशय, जल संसाधन।

भारत में जल संचयन की पुरानी प्रणालियों और परम्पराओं का इतिहास लगभग 5000 वर्ष पुराना है। प्राचीन अभिलेखों में जल स्रोतो को पोषित करने के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं। हड़प्पा नगर की खुदाई से लेकर विभिन्न काल खण्डों में जल संचयन व प्रबन्धन व्यवस्था एवं प्राचीन काल में जल स्रोतो को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए मानवीय प्रयासों की विस्तृत चर्चा शोधपत्र के माध्यम से की गई है।

*****

डॉ० आशा
(पी-एच0डी0)
पुरूषोत्तम आदर्श कन्या इण्टर कॉलेज
जलालाबाद, शाहजहाँपुर (उ0प्र0)

प्राचीन काल में जल स्रोतों को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए मानवीय प्रयास

पानी, समाज और सरकार के रिश्तों की कहानी बहुत पुरानी है। इस कहानी का पहला पात्र जो पानी से जुड़ा, वह निश्चित रूप से मानव रहा होगा। कबीले, राजा-महराजा, बादशाह और सरकारें बाद में आई। जहाँ तक भारत का प्रश्न है तो लगता है कि भारत में सबसे पहले ऋषि, मुनि और समाज के योग क्षेम से जुड़े विद्वानों ने ही इस रिश्ते को कायम करने और आगे ले जाने का काम किया होगा।

भारत में जल संचयन की पुरानी प्रणालियों और परम्पराओं का इतिहास लगभग 5000 साल पुराना है। हड़प्पा नगर में खुदाई के दौरान जल संचयन प्रबन्धन व्यवस्था होने की जानकारी मिलती है। प्राचीन अभिलेखों में जल स्रोतों को पोषित करने के साक्ष्य मिलते हैं। पूर्व मध्यकाल और मध्यकाल में भी जल संरक्षण परम्परा विकसित थी। पौराणिक ग्रन्थों में तथा जैन बौद्ध साहित्य में नहरों, तालाबों, बाधों, कुओं और झीलों का विवरण मिलता है। प्राचीन काल में जल को विविध रूप में संग्रहित कर सदुपयोग किया जाता था, मनुस्मृति के अनुसार तालाबों, पोखरों, नहरों एवं अन्य जलाशयों से गाँव का सीमांकन किया जाता था।[1]

धर्मशास्त्रों में जलाशयों को क्षति पहुँचाने वालों के लिए कठोर दंड का विधान है। मनु का कथन है कि तालाब को क्षति पहुँचाने वाले को पानी में डुबो दिया जाये अथवा सिर काटकर जान से मार देना चाहिए।[2] यदि तालाब को क्षति पहुँचाने वाला व्यक्ति तालाब की मरम्मत कर देता है तो उसे एक हजार पणों का दण्ड दिया जाना चाहिए[3] तथा व्यक्तियों को जल के समुचित उपयोग के लिए जल को सुरक्षित रखना एवं जमीन को डूबने से बचाना ही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। यह उल्लेख मिलता है कि प्रजा की भलाई के लिए बने हुए तालाब का अनाधिकार उपयोग करने वाले अथवा नहर के पानी को नष्ट करने वाले को आर्थिक दण्ड दिया जाना चाहिए[4] अर्थात् उपर्युक्त प्रावधान से तालाबों, पोखरों एवं अन्य तटबन्धयुक्त जलाशयों की महत्त्वपूर्ण सामाजिक उपयोगिता की जानकारी मिलती है। मौर्य कालीन तथा मौर्योत्तर कालीन जल संसाधनों के विभिन्न स्रोतों के विषय में जानकारी मिलती है। जल संसाधन के रूप में तालाब, कुओं, नहरों एवं नदियों का प्रयोग किया जाना सम्भव प्रतीत होता है। पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त जानकारी के रूप में 600 से 200 ई.पू. के कुएँ प्रकाश में आये हैं। ऐसे कुएं हस्तिनापुर[5], नई दिल्ली[6], रोपड़[7], उज्जैन[8], मथुरा[9] इत्यादि स्थानों से प्रकाश में आये हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जल प्रबन्धन का उल्लेख मिलता है। चन्द्रगुप्त मौर्य के जूनागढ़ अभिलेख में सुदर्शन झील के निर्माण का विवरण मिलता है। मौर्य काल के पश्चात् मौर्योत्तर कालीन भौतिक जीवन के महत्ता के प्रतीक जल संसाधनों पर प्रकाश पड़ता है। गड्ढों (खोख) को भी व्यवहार में लाया जाता था। सड़कों के किनारे प्रत्येक एक कोस की दूरी पर कुओं का निमार्ण एवं पनशालाओं (प्याऊ) का उल्लेख अशोक कालीन अभिलेखों में मिलता है।

मौर्य काल में कुएँ का उल्लेख है जो संसाधन के रूप में प्रयोग किये जाते थे। सिंचाई के लिए इनका वास्तविक रूप में कितना प्रयोग किया जाता था, स्पष्ट रूप में कुछ नहीं कहा जा सकता है परन्तु व्यक्तियों को उनसे पीने के लिए पानी अवश्य प्राप्त होता था। बक्सर से लेकर पटना तक गंगा नदी के किनारे दाहिने तरफ कुएँ मिलते हैं, जिससे शहरी लोगों को पीने का पानी मिलता होगा। कुएँ का बहुपयोग भी होता होगा। पीने के साथ-साथ सिंचाई के लिए भी इनका उपयोग किया जाता रहा होगा। मौर्योत्तर काल में कुएँ की संख्या में बढोत्तरी दिखाई पड़ती है। मथुरा[10] के मौर्योत्तर कालीन कुओं से सम्भवतः स्थानीय लोगों को पेयजल की आपूर्ति की जाती होगी। साहेथ से प्राप्त कुएँ की तिथि दूसरी शताब्दी के आस-पास मानी जा सकती है।[11] पाकिस्तान के अभिलेखों में उत्तरी-पश्चिमी सीमांत प्रान्त के वषिरोग सहचरों के 400-300 ई. पूर्व के कुएँ की चर्चा है। स्वयं के कल्याण तथा सामाजिक कल्याण के लिए पुष्पपुर के किसी व्यक्ति द्वारा बनवाये गये कुएँ का उल्लेख है।[12] इस बात से स्पष्ट होता है कि कुआँ प्रत्येक के कल्याण के लिए खोदा जाता था। अर्थात् इसका उपयोग पेयजल एवं सिंचाई आदि दोनों कार्यों के लिए किया जाता था। परन्तु स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता है कि कुओं से सिंचाई होती थी जब तक कि खेतों के मध्य में कुएँ

1. मनुस्मृति VIII 248
2. मनुस्मृति IX 279
3. वही
4. मनुस्मृति IX 281
5. एन्शिएन्ट इण्डिया सं0 10-11,16
6. इंडियन आक्रियोलॉजी ए रिब्यू 1954-55, पृष्ठ 14
7. वही, पृष्ठ 7
8. वही, 1955-56, पृष्ठ 19
9. वही, 1954-55, पृष्ठ 16
10. इण्डियन आक्रियोलॉजी ए रिब्यू 1954-55, पृष्ठ 16
11. मार्शल, ए0एस0आर0, 1910-11, पृष्ठ 24
12. स्टेन कोनो ''आरा स्टोन इन्सक्रिप्सन ऑफ कनिष्क'', एपिग्राफिया इंडिया

नहीं मिलते। पतंजलि ने कुआँ खोदने का वर्णन किया है। कुआँ खोदते समय वह मिट्टी से आच्छादित हो जाता था। लेकिन उसे कष्ट से आनन्द तब मिलता जब कुएँ से निकले पानी का उपयोग करता अर्थात् इससे उसे विशाल समृद्धि का अनुभव होता था।[13] कुओं एवं तालाबों से अन्याय पूर्वक जल लेने वालों के लिए मनु ने चन्द्रायण वृत का विधान किया है जिससे अनुमान किया जा सकता है कि कुएँ और तालाब सिंचाई के लिए निर्मित थे।

600-200 ई. पूर्व में एक बड़े तालाब के बारे में जानकारी मिलती है। तालाब का तटबन्ध ईंट की दीवारों से बना हुआ था। प्रवेश मार्ग के द्वारा तालाब में वर्षा का जल भरा जाता था। मौर्योत्तर कालीन अनेक तालाब देश के पश्चिमोत्तर भाग में थे, जो अब पाकिस्तान में है। शक एवं पहलव कालीन सिरकप एवं अर्द्धचन्द्राकार मन्दिर (चैत्य) के आंगन में पहली ई. सदी की इमारतों के साथ पानी के छोटे और छिछले कुंड का प्रमाण मिला है।[14] तक्षशिला के धर्मराजिका स्तूप के पास तालाब उत्खनन में प्राप्त हुआ है जिसकी तिथि प्रथम शताब्दी ई. की प्रतीत होती है।[15] यह दोनों तालाब बौद्ध मन्दिरों के दर्शन हेतु आये बौद्ध भिक्षुओं और उपासकों के लिए बनाये गये होंगे। यूनानी दतिपुत्र थेयोदोरस ने 29 ई. में सभी जीवों के सम्मान में तालाब बनवाया था सम्भवत: स्वात में जिसका उपयोग सिंचाई के लिए भी होता होगा।[16] मिनाण्डर कालीन महत्त्वपूर्ण बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपन्हों में सागल नगर (आधुनिक सियाल कोट) के तालाब और पोखरों (तलक-पोखरणि) का उल्लेख मिलता है।

सम्भवत: तालाब से सिंचाई का कार्य होता था। इलाहाबाद के निकट श्रृंगबेरपुर में ई. सन् के प्रारम्भ का बड़ा तालाब प्राप्त हुआ है जो गंगा के वर्तमान मार्ग से सटे होने के कारण इसका मुख्य उद्देश्य क्या था इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। भारत के उत्तरी तथा उत्तरी-पश्चिमी भागों में तालाबों की अनुष्ठानिक लोकप्रियता तालाबों की अर्पण की प्रथा सिद्ध होती है। ऐसी अनुष्ठानिक तालाब तक्षशिला, हस्तिनापुर, उदयपुर, अहिच्छत्रा (बरेली), कौशाम्बी एवं इलाहाबाद के निकट भीटा से प्राप्त हुये हैं। ऐसे तालाब तक्षशिला[17] से भी मिले हैं। इनकी तिथि पहली ई. सदी[18] निर्धारित की गई है। नि:संदेह यह तालाब मौर्योत्तर काल के हैं। कुछ तिथि को मार्शल महोदय ने ईशा पूर्व की तीसरी एवं दूसरी सदी निश्चित किया है। हस्तिनापुर से भी मन्नत तालाब मिले हैं जो प्रथम शताब्दी ई. के हैं। तक्षशिला, कौशाम्बी, अहिच्छत्रा[19] उदयपुर के आहार गाँव में प्राप्त मन्नत के तालाब प्राय: कुषाण युग के समकालीन हैं।[20] प्रथम, द्वितीय ई. में मन्नत के तालाब अहिच्छत्रा से भी मिले हैं। मन्नत के तालाब पहलवी अथवा हिन्द-पहलवी तालाबों के अनुरूप हैं।[21] मार्शल के अनुसार यह तालाब भारतीय शैली के हैं क्योंकि हिन्दुस्तान के मध्य में इलाहाबाद के निकट भीटा से कुछ टूटे-फूटे ताल, मन्दिर प्राप्त हुए हैं जो तक्षशिला में पाए गए तालाबों के अनुरूप हैं अर्थात् यहाँ तक पहलव कभी नहीं पहुँच पाए।[22] इस आधार पर यह स्पष्ट होता है कि तालाब भारतीय शैली के ही हैं। बंगाल एवं बिहार में भी जलाशयों का उपयोग मछली पालन, सिंचाई इत्यादि कार्य के लिए किया जाता होगा। साथ ही समाज कल्याण के लिए भी तालाबों को बनवाना पुण्य का कार्य माना जाता था। तालाबों का अस्तित्व कलिंग एवं पश्चिम बंगाल के निकटवर्ती इलाकों में भी प्राप्त होता है। हाथी गुम्फा अभिलेख[23] में कलिंग नगरी के तालाब की मरम्मत करने और उसके घिरे जाने का उल्लेख है। इस समय गहरे ठंडे तालाबों के जल का उपयोग पीने, नहाने-धोने इत्यादि के लिए किया जाता होगा।[24] पहली एवं दूसरी शताब्दी के तामलुक नगर में ईटों से बना सीढ़ीदार तालाब मिला है।[25] यह भी कलिंग के तालाबों जैसा रहा होगा क्योंकि तामलुक बड़े बन्दरगाह वाला नगर था जिसका रोम के साथ व्यापार होता था।

शक शासक रूद्रदामन के जूनागण अभिलेख में सौराष्ट्र की सुदर्शन झील के इतिहास का उल्लेख है। झील का निर्माण मूलरूप से चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन वैश्य पुष्यगुप्त ने किया और इसकी देख-रेख अशोक के राज्यपाल एवं यवनराजा तुषास्य ने किया। 400 वर्षों तक झील के बारे में कोई सूचना नहीं मिली है लेकिन रूद्रदामन (150 ई.सन्) के समय झील का बाँध भारी बाढ़ और सुवर्ण, रेखा, पलाशिनी इत्यादि नदियों के प्रबल प्रवाह के कारण टूट गया, जिसकी मरम्मत शक-शासक के राज्यपाल कुलैप के पुत्र पहलवी के अमात्य सुविशाख की देख-रेख में

13. मूयसा च अभ्युदयेन योगो भवति। कीलहार्न 1.11
14. मार्शल तक्षशिला, पृ0 155
15. वही, पृष्ठ 247
16. सी0आई0आई0, 11 पार्ट 1, सं0 24, पं0 1-3
17. मार्षल तक्षषिला, पृ0 463
18. वही, पृष्ठ 104, 145, 180
19. एन्शिएन्ट इंडिया सं0 10-11, पृष्ठ 18-19
20. इंडियन आक्रियोलॉजी ए रिब्यू, 1954 - 55, पृष्ठ 14
21. एन्शिएन्ट इंडिया सं0 4 पृष्ठ 125 फलक
22. तक्षशिला 11 पृ0 467
23. डी0सी0 सरकार पूर्वोक्त पृ0 207, पं03
24. बेनी माधव बरूआ ओल्ड ब्राहमी इन्सक्रिप्सन्स कलकत्ता 1929, पृ0 288
25. इंडियन आक्रियोलॉजी : ए रिब्यू 1954 - 55, पृ0 20

हुआ। अभिलेख में उल्लेख है कि सुविशाख ने बिना किसी कर को लगाये हुए अपने संचित कोष से अत्यधिक धन खर्च करके जनहित का कार्य किया। झील की मरम्मत से उसने प्रजा में व्याप्त निराशा को समाप्त किया। पश्चिम भारत में तालाबों के निमार्ण की परम्परा रूद्रदामन के उत्तराधिकारियों के द्वारा भी कायम रही। अभीर सेनापति रूद्रभूति जो शक-शासक रूद्र सिंह की सेवा में था उसने 181 ई. में काठियाबाड़ के गाँव में तालाब का निमार्ण करवाया।[26] इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कल्याण का रहा होगा।[27] नासिक के गुफालेख में उष्वदात को तालाबों और जलाशयों का निर्माता कहा गया है।[28] दक्षिण में उत्तरी कनारा जिले[29] से प्राप्त प्रथम और दूसरी शताब्दी के अभिलेख से पता चलता है कि वनवासी[30] के राजा की पुत्री महाभोजी शिवस्कन्दनागश्री ने एक नाग की मूर्ति, तालाब और बिहार दान किया।

कुषाण शासकों के समय अधिक तालाबों का निमार्ण हुआ। कुषाण उत्तर पश्चिमी में खुरासान से दक्षिण पूरब में बिहार तक विस्तृत भू-खण्ड पर शासन कर रहे थे। एस. पी. तात्सतोव के उत्खनन से कुषाण कालीन प्रथम शाताब्दी से लेकर तृतीय शाताब्दी के मध्य की नहरें प्राप्त हुई हैं। लेकिन भारत में किसी कुषाण कालीन नहर की जानकारी नहीं मिलती है। केवल मौर्ययुगीन नहरें अथवा 200 सदी ई. पूर्व की नहरें प्राप्त हुई हैं। कुम्हरा में 45 फुट चौड़ी, 10 फुट गहरी और 450 फुट लम्बी नहर मिली है जो मौर्यकाल की निर्धारित की गई है।[31] इन नहरों का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता रहा होगा। हाथी गुम्फा अभिलेख से पता चलता है कि कलिंग नगरी में 'तिवससत्' अर्थात् पुरानी नहरों का अस्तित्व था। तिवससत् शब्द के 300 वर्ष अथवा 103 वर्ष दोनों अर्थ लगाये गये है। दूसरे अर्थ के अनुसार नहर का निमार्ण मौर्यकाल के अन्त में किया गया होगा। खाखेल ने उल्लेख किया है कि उसने पुरानी नहर का विस्तार किया। 103 वर्ष पूर्व राजा नन्द द्वारा निकाली गई नहर को अपने शासन के पांचवे वर्ष में अपनी राजधनी तक खुदवाया था[32] जो यातायात एवं सिंचाई की सुविधा के लिए महत्त्वपूर्ण थी।

प्राचीन नगर विदिषा के निकट वेसनगर में प्राचीन नहर के संकेत मिले हैं। 1914-15 में उत्खनन के दौरान रामकृष्ण भण्डारकर को सिंचाई के लिए नहरों के अवषेष मिले है।[33] भण्डारकर ने कहा है कि नहर सम्भवत: वेस नदी तक जाती थी जो नहर से करीब दो फर्लांग पर थी।[34] इनके अनुसार सम्भवत: वेस नदी पर बांध बांधा गया होगा तथा इसका पानी खेतों की सिंचाई के प्रयोग में लाया जाता रहा होगा। भण्डारकर महोदय के अनुसार नहर 150 ई. पूर्व या इससे पहले कार्य कर रही थी। सम्भवत: इसका निमार्ण मौर्यकाल अथवा प्राक् मौर्यकाल में हुआ होगा।[35] पतंजलि ने भी सिंचाई करने वाली नहरों का उल्लेख किया है।[36] महाभाष्य में वर्षा के पानी को सुरक्षित रखने एवं उसे खेतों के कार्य में प्रयोग करने के लिए छोटी-छोटी नहरों के बारे में वर्णन किया गया है।[37] मनु ने प्रस्त्रवणानि और सततमुदकागम का उल्लेख कर सिंचाई में काम आने वाली नहरों एवं नदियों का वर्णन किया है।[38] तालाबों और पोखरों के लिए व्यक्तिगत प्रयास भी किये जाते थे। मनुस्मृति में घर, तालाब, फलोद्यान और खेतों के अनाधिकृत कब्जे के विरूद्ध नियम का वर्णन किया गया है।[39] इनके अनुसार तालाब, उद्यान, पत्नी एवं पुत्र को बेचना पाप है। उसके लिए तपस्या द्वारा प्रायश्चित करना चाहिए।[40] मनुस्मृति में वर्णन है कि कोई ग्रामीण तटबन्ध की दरार बन्द करने का प्रयास नहीं करता तो राजा को उसे गाँव से निकाल देना चाहिए।[41] इससे बाँधों एवं तालाबों को सुरक्षित रखने के लिए गाँवों की जिम्मेदारी के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। साथ ही राज्य के द्वारा भी संरक्षण प्राप्त होने की जानकारी मिलती है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में जल संसाधन की समुचित व्यवस्था करने के लिए राजतन्त्र के द्वारा ध्यान दिया जाता था क्योंकि प्राचीन काल में निर्मित बाँध जो खेती एवं अन्य कार्यों के लिए प्रयोग किये जाते थे। इसका प्रमाण अभिलेखीय साक्ष्य से प्राप्त होता है। स्वयं अशोक ने 'जल ही जीवन है,' इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए

शेष पृष्ठ 40 पर

26. डी0सी0 सरकार, पूर्वोक्त 176, पृ0 5-5
27. वही, 1-5
28. तडाग-उदयान-करेण, वही, 1161 पं
29. फ्लीट जे0आर0ए0एस0, 1905 पृ0 304
30. इंडियन एन्टिक्विटी XIV, पृ0 334
31. इंडियन आक्रियोलाजी ए रिब्यू 1954-55, पृ0 19
    कुम्हरार एक्सकेवेषन रिपोर्ट, पृ0 24
32. करूआ ओल्ड ब्राहमी इंसक्रिप्सन्स, पृ0 43
33. ए0एस0आर0 1914-15, फलक XL IX
34. वही, पृष्ठ 70-71
35. वही, पृष्ठ 70
36. षाल्यथे कल्या: प्रणीयन्ते ताभ्यष्वं पानीय पीयते उपस्पृष्य च षाल्यष्च भाव्यन्ते । कीलहार्न, पृष्ठ 32, 276, 111 पृष्ठ 39
37. डी0के0 काजीलाल लेख इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टली, XXXI पृ0 376 में
38. मनुस्मृति VIII, 248, 252
39. गृह तडागभाराम क्षेत्रं, VII 264
40. मनुस्मृति XI, 62
41. मनुस्मृति IX, 274

that the interactive group activities has promoted the learning skills among B.Ed. Students.

The results showed that the Interactive group activity was helpful in promoting learning skills among B.Ed. students. Probable reason may be that the learner does not simply 'take in' information handed to them, instead in these activities they are actively engaged and provided with opportunities to think about real world problem, critically questioning on the various aspects of the topic allotted to the students. It was also enmeshed them in creativity. The entire activity was infused with collaboration and communication. Over all, the activities conducted were fruitful in creating learning environment facilitating the promotion of learning skills.

Conclusion:

The action research reflects the promotion of learning skills influenced by the Interactive group activities among the B.Ed. students. The activities inculcated the 21st Century skills as creativity, critical thinking, communication, collaboration, and Information Media and Technology Skills (IMTS) which were observed by analyzing their components. Promotion of learning skills is due to the opportunities provided during the activities. The problems encountered by the researchers were resolved by using the activities. It emphasizes a need to focus on teaching methods including modeling, coaching, scaffolding, articulation, reflection, and exploration which can help the learners to construct knowledge in a better learning environment.

References :

1. Barron, B., & Darling-Hammond, L. (2008). Teaching for Meaningful Learning: A Review of Research on Inquiry Based and Cooperative Learning. Book Excerpt. George Lucas Educational Foundation.
2. Darling-Hammond, L., & McLaughlin, M. W. (1995). Policies that support professional development in an era of reform. Phi delta kappan, 76(8), 597.
3. NCFTE (2009). National curriculum framework for Teacher Education-Towards Preparing Professional and Humane Teachers. NCTE, New Delhi.
4. Piaget, J. (1979). Comments on Vygotsky's critical remarks.
5. Sigel, I. E., & Cocking, R. R. (1977). Cognitive development from childhood to adolescence: A constructivist perspective. Holt, Rinehart and Winston.
6. Urbani, J., Roshandel, S., Michaels, R., & Truesdell, E. (2017). Developing and Modeling 21st-Century Skills with Preservice Teachers. Teacher Education Quarterly, 44(4), 27.
7. Webb, N. M., & Mastergeorge, A. (2003). Promoting effective helping behavior in peer-directed groups. International Journal of Educational Research, 39(1-2), 73-97.

◆◆◆

पृष्ठ 16 का शेष **प्राचीन संस्कृत साहित्य में .....**

अपने अभिलेख में उल्लेख किया है कि मैंने प्रत्येक एक कोस की दूरी पर कुएँ तथा प्याऊ की व्यवस्था करवाई। इस तरह खाखेल शासक ने भी अपने राज्य को समृद्धि प्रदान करने के लिए कलिंग तक नहर का विस्तार करवाया। रूद्रदामन ने भी जल संसाधन पर विशेष ध्यान देते हुए अपने अभिलेख में वर्णित किया है कि प्राचीन बाँध में दरार पड़ जाने के कारण मैंने उसे बिना बेगार एवं कोई विशेष कर लगाए बिना राज्य कोष से संचित धन व्यय कर बाँध का निर्माण करवाया। यही नहीं साहित्यिक स्रोतों में भी पतंजलि एवं मनु ने भी जल संसाधन को सुरक्षित रखने एवं उसे हानि पहुँचाने वाले को दण्डित करने का उल्लेख किया है। अर्थात पृथ्वी, जल का आश्रय है। जल का सूक्ष्म रूप ही प्राण है। मन, जलीय तत्वों अर्थात विचारों का समुद्र है। वाणी की सरसता और जीवों में आर्द्रता का कारण भी जल ही है। आँखों की देखने की ताकत और उसकी सरसता का कारण भी जल है। जल, कानों का सहवासी है। जल का निवास धरती पर है। अंतरिक्ष में जल व्याप्त है। समुद्र जल का आधर है तथा समुद्र से ही, जल वाष्प बनकर वर्षा के रूप में धरती पर आता हैं। अत: समाज प्रकृति के इस अनमोल उपहार के महत्त्व को समझे और जल के संचित भण्डार का सदुपयोग करें।

◆◆◆